भजन

तर्ज–तरसत हमरे प्यासे नयनवा

रंगमोहोल की तीसरी भोम में,पिया प्यारे आयें,इश्क पिलायें

1–पांचवीं भोम रंगपरवाली से,युगल पिया जी संग रूहों के
लटक मटक कर पिया चले आयें,तीसरी भोम की शोभा बढ़ायें
दीदार देते हैं पशु पंखी को,नैनों से नैन जब पिया जी मिलायें
2–तीसरी भोम की देहेलान में रूहें,प्यारे पिया को सिनगार करावें
आसमानी मन्दिर में श्यामा जी को,रूहें बड़े लाड से सजरें संवारें
शोभातो देखो कितनी है अनुपम,पिया श्यामा को देखें तिरछी नजरसे
3–पियाजी श्यामाजी की मांग भरें जब,सब रुहें भी भई हैं सुहागिन
अब अरोगें पिया रंग रंगीले, संग रुहों के लाड लडावन
देहेलान से उठकर युगल पिया जी, सिहांसन पर जब पधरायें
4–दाहिनी तरफ दूजा जो है मन्दिर, सन्मुख विराजें श्याम सुन्दरवर
रस भरी वाणी में इश्क लाड भर के,पिया को सुनाती है बाई नवरंग
इतने समें में अक्षरब्रह्मजी आयें,नजर पिया की पाकर धाम लौट जायें
5–इन समें पिया प्यारीं वनों.में जायें,लटक.मटक.कर शाक मेवा ल्यावें
पड़साल की दाहिनी तरफ बैठ रूहें, अपनी ही मस्ती में पान बनावें
भर कर पान में प्यार रूहों ने, पिया पलंग नीचे छाबे धराये

6–इन समें लाडबाई आज्ञा पाकर, थाल आरोगन को ले आई
उतारे वस्तर पहनी पिछौरी, लगे आरोगन अरोगायें पिया प्यारीं
खाते खिलाते भी इश्क फरमायें,कैसे कहें ये सुखतो कहे भी न जायें
7–पान–बीड़ी मुख जब लेवें पियाजी,अधरों की शोभा लगे बड़ी प्यारी
आरोग के रूहें जब.पिया पास आवें,पिया सब रूहों को पान खिलायें
इश्के पान लेकर रूहें मस्तानी, पच्चीस पक्षों में घूमें दीवानीं
8–पोहोर पिछले सैयां आयें, युगल पिया का दर्शन पायें
पिया कहें श्यामा सुखपाल आए, पूछो सैंयन कहाँ घूमने जायें
सुखपाल में सब रूहों को लेकर, पिया जी चलें अब धाम भ्रमण पर